प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

महामहिम राष्ट्रपति जी के पूर्व विशेष कार्य अधिकारी

चेयर प्रोफेसर, डॉ. आंबेडकर चेयर, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

मो. 9818759757, E-mail: hindswaraj2009@gmail.com

पत्रांक: DACHREV/2025/94 **दिनांक: Jan 14th, 2025**

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि साहित्य-रत्न मासिक ई-पत्रिका का एक लघुकथा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है. साहित्य में लघुकथाओं का अपना वैशिष्ट्य है. लघुकथा सर्जक देखा जाय तो अपनी विधा के प्रज्ञाशील व नवोन्मेषी साहित्यसेवी होते हैं और कम शब्दों में बहुत बड़ा संदेश देते हैं..

लघुकथाएं हमारी भारतीय मौखिक परम्परा में विद्यमान रही हैं. बचपन में पीठ पर थपकियाँ देकर बच्चे को बहलातीं दादी, नानी के किस्से अपनी किस्सागोई के लिए प्रसिद्ध रहे हैं. इनका मानकीकरण जब लघुकथाओं में सामने आया तो साहित्य की इस विधा में दुनिया भर में वृहद कार्य हुए. अपनी थाती को सुरक्षित और बचाए रखना आज हम सबका दायित्व है. इसे हम अपने भारतीय वांग्मय में खोजें तो लघुकथाएं वहां भी मिलेंगी. हमें इसकी जड़ें अभिजात्य देशों में खोजने से पहले अपने अतीत में खोजने चाहिए. यद्यपि लघुकथाओं के प्रारंभिक सृजन के दावे अलग-अलग किए गए हैं लेकिन लघुकथाओं को स्मृतियों व श्रुतियों में खोजें तो वहां भी इन्हें पाया जाता है. अच्छी बात यह है कि लघुकथाएं अब खूब लिखी जा रही हैं और पढ़ी भी जा रही हैं.

साहित्य-रत्न मासिक ई-पत्रिका के इस अंक में जितने भी साहित्यकारों ने अपने सृजन को साझा किया है, वे लघुकथाएं कल पाठकों के बीच विरासत बनेंगी. इस पत्रिका के सम्पादक श्री राम अवतार बैरवा जी एवं इस अंक के अतिथि संपादक श्री बलराम अग्रवाल जी के इस महनीय कार्य की मैं अंतःकरण से प्रशंसा करता हूँ. हिंदी, पंजाबी एवं नेपाली भाषा की लघुकथाओं के इस प्रकाशन से निश्चय ही साहित्य जगत को बहुत बड़ा लाभ मिलने जा रहा है. निःसंदेह इस पत्रिका से जुड़े संपादक, अतिथि संपादक एवं सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं.

मंगलकामनाओं सहित,

(प्रो. कन्हैया त्रिपाठी)